# इस्लाम धर्म शास्त्र

**लेखक** : जनाब सैय्यद लियाक़त हुसैन हिन्दी बनारसी
**अनुवादक** : जनाब सैय्यद जाफ़र असर नक़वी साहब जायसी

क़िस्त : 3

**क़यामत (प्रलय) का वर्णन**

अर्थात एक दिन ऐसा आएगा जब सब के सब मर जाएंगे ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ भी शेष न रहेगा। फिर ईश्वर मिट्टी से बने शरीरों को उसी मिट्टी से जन्म देगा। और प्राणों को उनमें प्रवेश करके जीवित करेगा और उनके कर्मों की गमना के पश्चात धार्मिक मोमिनों को स्वर्ग तथा कुकर्मियों को नरक में स्थान दिया जाएगा।

**मृत्यु का वर्णन**

सलमान ने कहा, ''यह बताओ कि तुम्हारी मृत्यु किस प्रकार हुई और क्या कष्ट हुआ?'' मृतक ने उत्तर दिया, ''हे सलमान! कुछ न पूछ! ईश्वर की शपथ खाकर कहता हूं यदि कोई व्यक्ति मेरे समस्त शरीर को कैंची से काट कर कण–कण अलग करता और हड्डियों से मास को अलग करता तो भी उतना कष्ट न होता जिनता मृत्यु का कष्ट है। हे सलमान! मैं संसार में सर्वदा अच्छे कर्म किया करता था। सदैव नमाज़ पढ़ता कुर्आन का अध्ययन करता। माता के साथ सदव्यवहार करता ओर पवित्र धन से अपना जीवन व्यतीत करता था सहसा रोगग्रस्त हुआ और मेरी आयु का अन्तिम क्षण आ पंहुचा। उस समय एक विशाल और भयानक व्यक्ति मेरे सम्मुख हवा पर खड़ा हो गया और वहीं से मेरे नेत्रों की ओर संकेत किया नेत्रों का प्रकाश जाता रहा, कानों की ओर संकेत किया तो कान बहिरे हो गये, जिहवा की तरफ इशारा किया तो वह बन्द हो गई और मैं मूक हो गया। मैंने पूछा कि तू कौन है कि मेरे साथ ऐसा दुर्व्यवहार किया उसने उत्तर दिया मै यम दूत हूं। अब तेरे जीवन की अवधि समाप्त हो गई........... फिर नाक के द्वारा मेरे प्राणों का अपहरण कर लिया जिसका कष्ट मुझे अब तक नहीं भूला है।''

**कब्र के प्रश्नोत्तर**

क़ब्र के भीतर एक भयानक यम दूत जिसका नाम 'मुनकिर' है अग्नि गदा लिए मेरे पास आया और कहने लगा बतला तेरा ईश्वर कौन है? पैग़म्बर और इमाम तेरे कौन हैं? तू किस धर्म का अनुयायी था? यह सुनकर मैं अत्यन्त भयभीत हुआ। मेरा रोम–रोम कांपने लगा। इतने में ईश्वर की कृपा से हृदय स्थिर हुआ तो मैंने उत्तर दिया कि ईश्वर मेरा पालने वाला 'अल्लाह' है। मुहम्मद साहब मेरे रसूल हैं। हज़रत अली अ0 तथा उनके मासूम समस्त पुत्र मेरे इमाम तथा नेता हैं और इस्लाम मेरा सच्चा दीन है और कुर्आन मेरा धार्मिक ग्रन्थ है। फिर दूसरे दूत ने जिसका नाम नक़ीर था भयानक स्वर से मेरे कर्म तथा विश्वास से सम्बन्धित प्रश्न पूछे। ईश्वर की कृपा से मैंने उसका भी उत्तर दिया। 'स्वर्ग' सत्य है 'नरक' अवश्य है, सिरात का पुल अवश्य है और कर्मों की नाप तोल (मीज़ान) अवश्य है। क़ब्र में 'मुनकिर' तथा नकीर द्वारा प्रश्न किया जाना सत्य है। निस्सन्देह प्रलय अवश्य होगी। प्रत्येक मृतक व्यक्ति जो क़ब्र में हैं ईश्वर उन्हें अवश्य उठा कर खड़ा करेगा। फिर मुझे क़ब्र में बुला कर स्वर्ग की खिड़की खोल दी गई।

**मलक–उल–मौत (यम दूत)**

प्राण अपहरण करने का कार्य हज़रत

इजराईल फरिश्ते के अधीन है और उनके सहायक फ़रिश्ते भी हैं जो उनके आदेशानुसार प्राणों का हरण करके उनको अर्पित कर देते हैं। सर्व प्रथम पृथ्वी के निवासी मरेंगे फिर आकाश वाले मरेंगे। फिर जिबरईल, मीकाईल, फ़रिश्ते एंव अन्य आकाश के निवासी मरेंगे। मलक–उल–मौत शेष रहेंगे फिर ईश्वर उनको भी मरने की आज्ञा देगा और वे भी मर जाएंगे। फिर ईश्वर पुकारेगा कि वे लोग कहां हैं जो मुझे शारीरिक रूप में मानते थे और वे लोग कहां हैं जो मेरे साथ दूसरे ईश्वर की भी पूजा करते थे।

**बरज़ख का समय**

उस समय को कहते हैं जो मृत्यु काल से लेकर क़यामत तक का है मध्यकालीन समय है। मुनकिर व नकीर के प्रश्न के पश्चात कुछ लोग आराम से रहेंगे और कुछ दुख एंव कष्ट से पीड़ित होंगे 'ज़ग़ता व फिशारे क़ब्र इसी शरीर के साथ है और बरज़ख़ काल की समस्त घटनाएं प्राण से सम्बन्धित हैं।

**ज़ग़ता एंव फ़िशारे क़ब्र**

जिस प्रकार कपड़े को पानी में भिगो कर फिर उसको निचोड़ कर झटका देते हैं उसी प्रकार पृथ्वी क़ब्र में मुर्दे के शरीर को निचोड़ कर झटका देगी। इसी को ज़ग़ता एंव फिशारे क़ब्र कहते हैं।

**सूर (भोपू) की ध्वनि से पहले क़यामत के चिन्ह**

(1) याजूज, माजूज (प्रसिद्ध कपटी पापी) का बाहर निकलना (2) दावत–उल–अर्ज़ का प्रकट होना (3) सूर्य का पश्चिम से उदय होना। (4) एक ऐसे धुएं का (धूम्र) का निकलना जो 40 दिन तक रहेगा और सब लोगों का घेराव कर लेगा। यह पापियों को अधिक कष्ट देगा।

**नफ़ख़–ए–सूर (भोपू की ध्वनि)**

ईश्वर ने हज़रत इसराफ़ील फ़रिश्ते के साथ ही 'सूर' (एक प्रकार का भोपू) को भी जन्म दिया जिसका एक किनारा पूर्व दिशा तथा दूसरा किनारा पश्चिम दिशा में है। हज़रत इसराफ़ील उस सूर को मुख से लगाए खड़े हुए हैं। जब ईश्वर का आदेश होगा तो वे सूर फूकेंगे इसी को नफ़ख़–ए–सूर कहते हैं। सूर दो बार फूंका जाएगा। इसका स्वर बड़ा भयानक होगा।

**प्रथम ध्वनि** :– प्रथम ध्वनि में पृथ्वी तथा आकाश के समस्त प्राणी एक साथ मर जाएंगे।

**द्वितीय ध्वनि** :– जब सूर दूसरी बार फूंका जाएगा तो लोग जीवित होकर अपनी क़ब्रों से तीव्र गति के साथ उठेंगे और आकाश की ओर उस स्थान की ओर जाएंगे जहां जाने का आदेश ईश्वर की ओर से प्राप्त होगा।

**क़यामत (प्रलय) से पूर्व घटने वाली घटनाएं**

(1) आकाश पत्रों की भांति लपेटा जाएगा। (2) आकाश फट जाएगा और विभिन्न रंगों में दिखाई देगा तथा अपने स्थान से दूर दृष्टिगोचर होगा। (3) तारा गण की ज्योति नष्ट हो जाएगी। (4) सूर्य तथा चन्द्रमा का प्रकाश जाता रहेगा और दोनों एक स्थान पर एकत्रित हो जाएंगे। (5) समस्त पर्वत धुनी हुई रूई की भांति दृष्टिगोचर हो जाएंगे। उनका कण–कण वायु मण्डल में उड़ेगा और वे पृथ्वी की भांति समतल हो जाएंगे। (6) पृथ्वी समतल हो जाएगी। ऊंचाई नीचाई शेष रहेगी।

क़यामत के दिन ईश्वर अपने दासों को एक क्षण मात्र मे एक स्थान पर एकत्र करेगा फिर समस्त आकाशों को लाकर उनके चहु ओर घेराव डाल देगा। तत्पश्चात एक बादल फ़रिश्तों के साथ लाकर लोगों को घेर लेगा।

**पशुओं का महशूर होना**

अर्थात पशुओं को एकत्र करके उनसे पूछ–ताछ की जाएगी और उन अत्याचारों का भुगतान किया जाएगा जो मनुष्यों द्वारा उन पर किया गया था।

**मलक, जिन तथा शैतानों का महशूर होना**

अर्थात फ़रिश्ते, जिन्नात तथा राक्षस रूपी जिन्नात ऐव शैतान भी एकत्रित होंगे और पूछ–ताछ की जाएगी। फ़रिश्ते तो स्वर्ग में प्रवेश करेंगे

परन्तु शैतान नरक में जाएंगे और जिन्नातों में जो मोमिन होंगे वे पुण्य भागी होकर स्वर्ग में जाएंगे कुछ 'आराफ़' (वह स्थान है जो एक टीले के समान नरक तथा स्वर्ग के मध्य में स्थित है–संशोधक) में रहेंगे।

**बालकों एंव पागलों का महशूर होना**

बालक और पागल भी एकत्र किये जाएंगे और उनसे भी पूछ–ताछ होगी।

**मीज़ान (मापक)**

मीज़ान निस्सन्देह है अर्थ में विभिन्नता है उस मीज़ान (तराजू) से ही समस्त कर्म नापे तौले जाएंगें।

**गणना एंव हिसाब**

ईश्वर तुरन्त गणना करने वाला और सभी गणितज्ञों से तेज है। वह एक क्षण में सृष्टि का हिसाब करता है।

**सिरात**

यह एक प्रकार का पुल है जो नरक के ऊपर बना है यह बाल से अधिक बारीक तथा तलवार की धार से अधिक तेज़ है और अग्नि से अधिक गर्म है। जब तक इस पुल को पार न करें कोई स्वर्ग में नहीं जाएगा मोमिन तथा सच्चे ईमान वाले उसे विधुत की भांति तीव्र गति से पार कर जाएंगे। कुछ रूकावट तथा कठिनाई से पार करेंगे परन्तु मुक्ति पाएंगे। कुछ इस पर से नरक में गिरंगे।

**स्वर्ग का संक्षिप्त वर्णन**

स्वर्ग तथा नरक का जन्म हो चुका है। हज़रत मुहम्मद साहब मेराज की रात्रि में स्वर्ग में पधारे थे और नरक का निरीक्षण किया था।

**स्वर्ग के गुणः**– (1) सदैव जीवित रहने का स्थान है वहां मृत्यु नहीं है। (2) वहां किसी प्रकार का भय, शंका, चिन्ता, दुख तथा रोग इन्यादि नहीं होता कोई बूढ़ा, अन्धा, बहिरा इत्यादि नहीं होता। (3) नेत्र जिस वस्तु से स्वाद पाए मनुष्य को प्राप्त होता है। (4) स्वर्ग से कभी बाहर नहीं निकलते वरन् सदैव वहीं रहते हैं। (5) वह पवित्र तथा सज्जन व्यक्तियों का स्थान है। (6) वहां छल, कपट, बैर ईर्ष्या तथा मार पीट इत्यादि नहीं हैं। (7) प्रत्येक व्यक्ति उस पर सन्तोष करता है जो वस्तु ईश्वर ने उसे प्रदान की है। वह उसी में प्रसन्न रहता हैं और दूसरे व्यक्तियों के पद की इच्छा नहीं करता। (8) स्वर्ग वासियों को लघु शंका, दीर्घ शंका नहीं। उनमें किसी प्रकार की मलिच्छता तथा दुर्गन्ध नहीं पायी जाती अपितु उनका पसीना सुगन्धित इत्र की भांति शरीर से बाहर निकलता है। (9) उनकी स्त्रियों को जो 'हूरों' (स्वर्ग बाला) तथा मनुष्यों में से होंगीमासिक धर्म नहीं आता। प्रजनन की गन्दगी नहीं होती तथा उनमें शंका, छल, कपट, बैर तथा दुराचरण नहीं होता। (10) स्वर्ग वासी उन स्वर्णमयी कुर्सियों पर जो कलाबत्तू से बनी तथा सच्ची मोतियों और जवाहिरात से अलंकृत होंगी तकिये लगाए आमने सामने बैठे होंगे। (11) स्वर्ग की नहरों के शीतल तथा पवित्र जल को बिना उसमें किसी प्रकार का गड्ढा किये जितना चाहे ऊँचा किया जा सकता है और वे समस्त घरों तथा वृक्षों के नीचे से बहती हैं। (12) स्वर्ग की चारदीवारी में लगी ईंटे सोना, चाँदी तथा याकूत की हैं और उनके निर्माण में मिट्टी के स्थान पर कस्तूरी का प्रयोग किया गया है। (13) वहां सर्वदा प्रकाश रहता है। अन्धकार नहीं होता। (14) स्वर्ग के चाकरों के हाथ में सोना, चांदी तथा जवाहिरात के प्याले होंगे जिसमें पीने के हेतु सुन्दर द्रव भरा होगा। (15) जिस पक्षी के मांस के कबाब की इच्छा होगी उपस्थित हो जाएगा। (16) बैकुण्ठ के कमरे सुन्दर पुष्पों तथा हरियाली से सुसज्जित होंगे।

**तूबाः**–यह एक प्रकार का वृक्ष है जो स्वर्ग में है जिसकी जड़ मुहम्मद साहब के घर में है और उसकी शाखाएं प्रत्येक मोमिन के घर में हैं। वह मोमिन जिस वस्तु की इच्छा करता है वह शाखा उसके लिए वह वस्तु उपस्थिति करती है। उसका क्षेत्रफल इतना विस्तृत है कि यदि एक

तेज़ दौड़ने वाला घोड़ा सौ वर्ष तक दौड़े तो उसकी छाया से बाहर नहीं निकलेगा।

**नरक तथा आराफ़ का संक्षिप्त वर्णन**

नरक के गुणः—(1) उसकी गहराई अत्यधिक है। बहुत ही अधिक गर्मी है। (2) वहां नित्य नये दण्ड दिये जाएंगे। (3) हथौड़े और गदा लोहे का है। (4) उसका अज़ाब (बुरे कर्मों का दण्ड) कम नहीं होता। (5) नरक निवासियों को मृत्यु नहीं है। वे उसमें सदा जलते रहेंगे। (6) वह ऐसा घर है जहां दया, क्षमा तथा कृपा नहीं है। (7) नरक निवासियों की प्रार्थना स्वीकार नहीं होती। (8) अग्नि पर सर्पों तथा बिच्छुओं की अधिकता है। (9) वहां का जल पिघले हुए ताम्र, विष तथा रक्त की भांति है। (10) नरक की अग्नि का ईन्धन, काफ़िर तथा पापी व्यक्ति तथा गर्म किए हुए पाषाण हैं। (11) नरक के घरों से अग्नि की ज्वाला तथा चिंगारी निकलती है। (12) नरक के कूप में एक ऐसा विषैला सर्प है कि उस कूप के निवासी उसकी दुर्गन्ध तथा विष से पनाह मांगते हैं।

**नरक के तबक़ात (खण्ड)**ः—(1) नरक (2) सईर (3) सक़र (4) जहीम (5) नती (6) हतमा (7) हरविया। कुछ विद्वानों का कथन है कि नरक के सात द्वार हैं वही दरका कहलाते हैं।

**प्रथम दरका**ः—एकेश्वरवादियों का है कि अपने कर्मों के अनुसार जो संसार में किये थे दण्डित होंगे फिर उनको बाहर निकाला जाएगा।

**द्वितीय दरका**ः—यहुदियों का है।

**त्रितीय दरका**ः—नसारा (ईसाइयों का निवास स्थान)

**चतुर्थ दरका**ः—साईबीन का स्थान है मजूसियों (पारसियों का स्थान है।)

**षष्टमीय दरका**ः—मुशरिकीन (ईश्वर को एक न मानने वाले) अर्थात मूर्ति पूजा करने वालों का स्थान है।

**सप्तमीय दरका**ः—यह सब से नीचे है और मुनाफ़िक़ों (दिखावे का ईमान लाकर पलट जाने वाले) के लिए है। और कहा कि जो लोग काफ़िर हुए और लोगों को ईश्वर के मार्ग से पथभ्रष्ट किया है हमने उनके लिए अज़ाब (दण्ड) अधिक इस कारण किया कि वे झगड़ा फैलाते थे कुछ लोगों का कथन है कि अग्नि पर ऐसे सर्पों तथा बिच्छुओं की अधिकता है जिनके डंक वृक्षों की भांति ऊचे हैं। और कहा कि नरक पापियों के मार्ग की ओर है। धर्मावलम्बी विद्रोही तथा काफ़िरों का ठिकाना है। वे इसमें अनेकों 'हक़ब' तक रहेंगे। कुछ का कथन है कि 43 हक़ब हैं। प्रत्येक हक़ब 70 ख़रीफ़ का है। प्रत्येक ख़रीफ़ 700 वर्ष का है। प्रत्येक वर्ष 360 दिन का है तथा प्रत्येक दिन 1000 वर्ष का है। यदि नरक निवासियों का एक वस्त्र आकाश तथा पृथ्वी के मध्य लटकायें तो उसकी दुर्गन्ध से समस्त संसारी मर जाएंगे।

**फ़लक**ः—नरक में दर्रा है जिसमें 70 हज़ार कोठरियां हैं प्रत्येक कोठरी में 70 हज़ार काले सर्प हैं। प्रत्येक सर्प के उदर में 70 हज़ार घड़े विष के हैं। समस्त नरक वासी उस पर से होकर जाएंगे।

**आराफ़**ः—स्वर्ग तथा नरक के मध्य एक हिसार (गढ़) है उसमें एक द्वार है उस द्वार का बाहरी भाग 'कृपा' है जो स्वर्ग की ओर होगा और उसका भीतरी भाग 'अज़ाब' (दण्ड) है जो नरक की ओर होगा। ईश्वर आराफ़ में उन लोगों को रखता है जो अपने कर्म के कारण विशेष पुण्य के भागी नहीं है और न उन्होंने ऐसा पाप ही किया हो कि नरक भागी बनें।

**गुनहान—ए—कबीरा (दीर्घ पाप)**

दीर्घ पाप वे पाप हैं जिसके लिए धर्म—शास्त्र ने कोइ दण्ड निर्धारित किया हो या अज़ाब की धमकी दी गई हो। इन पापों की सूची इस प्रकार हैः—

(1) अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को उसका साझीदार मानना (यह महान पाप है) (2) किसी मोमिन (धर्मी) की बिना कारण हत्या करना

(3) विवाहित तथा अन्य स्त्रियों पर व्यभिचार तथा भ्रष्टाचार का आरोप लगाना। (4) अनाथ बालकों के धन को अत्याचार से लेकर अपने तथा दूसरों के व्यय में लाना। (5) अन्य तथा विवाहित स्त्रियों एंव अपनी माता बहिनों से बलात्कार करना। (6) जिहाद (धार्मिक युद्ध/संग्राम) अनिवार्य युद्ध क्षेत्र से भाग जाना। (7) माता पिता की आज्ञा का पालन न करना तथा द्रोही होना। (8) ब्याज लेना व देना (9) जादू करना। (10) झूठी शपथ खाना। (11) मदिरा पान करना। (12) जुवा खेलना। (13) मुहम्मद साहब तथा अन्य इमामों को वचन देकर वचन तोड़ देना। (14) हरम–ए–मक्का में ऐसे कार्य करना जिन पर अल्लाह ने प्रतिबन्ध लगाया है। (15) ईश्वर की कृपा से निराश होना। (16) ईश्वर के अज़ाब। (दण्ड) से निर्भय होना। (17) क्रय–विक्रय में अधिक लेना तथा कम देना। (18) गाना गायन करना अथवा सुनना, बाजा (संगीत) बजाना अथवा सुनना एंव नृत्य देखना अथवा नृत्य करना। (19) एग़लाम (बालकों से अप्राकृतिक व्यवहार–लौंडे बाज़ी) करना इसका दण्ड बहुत कड़ा है। (20) चोरी करना। (21) पीठ पीछे धर्मियों की शिकायत करना। (22) अनिवार्य कार्यों को त्याग देना जो क़ुर्आन तथा हदीस से सिद्ध हों। (23) अनावश्यक व्यय करना। (24) इमामों से सम्बन्धित (झूठी) हदीसों (कथन) का वर्णन करना अपितु हर प्रकार का झूठ बोलना (25) मृतक पशुओं एंव सुअर का मांस खाना तथा ऐसे पशुओं का मांसाहर करना जो धर्म के नियमों के अनुसार ज़िबह न किया गया हो या जिन पशुओं का मास खाना हराम हो। (26) सत्य गवाही को छिपाना। (27) धन को अनुचित रूप से व्यय करना। (28) काफ़िरों के देश तथा वन को तयाग कर इस्लामी देश में आकर रहे और फिर उसी स्थान पर जाकर निवास करे। (29) लघु पापों को निरन्तर करते रहना। (30) छोटे पापों को तुक्ष्छ समझना। (31) मोमिनों पर अत्याचार करना। (32) खेल कूद में लग्न रहना। (33) घूस लेना। (34) अत्याचारियों के अत्याचार में सहयोगी बनना। (35) लोगों का धन चुराना। (36) लोगों से वचन भंग होना। (37) गौत्र वालों तथा कुटुम्बियों के साथ सहनशील न होना। (38) भविष्य वाणी करना। (39) मादक पदार्थ खाना। (40) किसी पर दोष लगाना। (41) साधारण जल पर प्रतिरोध लगाना। (42) मूत्र की गन्दगी से न बचना। (43) ऐसे कार्य करना जिसके कारण लोग उसके माता पिता को अपशब्द कहें। (44) ऐसी वसीयत करे जिस में अधिकारियों का अधिकार मारा जाए। (45) ऐश्वरीय कर्मों से असन्तुष्ट होना। (46) ऐश्वरीय भाग पर वाद विवाद करना। (47) घमण्ड करना। (48) ईर्ष्या करना। (49) मोमिन से बैर रखना तथा उनको धमकाना। (50) आलोचना करना। (51) किसी मोमिन का बिना किसी कारण शरीर का कोई भाग काटना। (52) हराम (अनुचित निषिद्ध) कार्यों में सहयोग देना। (53) बुरी बातों से मना न करना। (54) वचन देकर पूर्ण न करना। (55) मोमिनों को धिक्कारना। (56) मोमिनों की ओर से शंका रखना। (57) मोमिनों को बिना कारण बुरा भला कहना। (58) मोमिनों के गुप्त गुणों को टोह लगाना। (59) मोमिनों को हीन समझना। (60) दास तथा दासियों को अनावश्यक दण्ड देना। (61) मुसलमानों का मार्ग रोकना। (62) अपने सन्तान की देख–रेख न करना। (63) अनुचित कार्यों में सहायक होना। (64) धार्मिक कार्यों में नूतनता उत्पन्न करना। (65) भले कार्यों को करते हुए भी बुरे कार्यों के करने से रोक थाम न करना। (66) मदपान करने वालों के साथ उठना बैठना (67) धर्म में नूतनता उत्पन्न करने वालों के साथ उठना बैठना। (68) असत्य गवाही देना। (69) समर्थ होते हुए लोगों को उनका 'हक़' (अधिकार) न देना (70) जिहवा पर अनुचित उपशब्द लाना। (71) रक्त पीना। (72) अनिवार्य ज़कात का न देना। (73) दूसरे वंश में प्रवेश करना तथा फिर बाहर आ जाना। **(बाक़ी पेज नं0 16 पर......)**

# औक़ाफ़ की बाज़याबी के लिए क़ौम के हर आदमी का मुत्तहिद होना ज़रूरीःकल्बे जवाद

मलजिसे उलमा-ए-हिन्द के मुख्य कार्यालय स्थित इमाम बाड़ा ग़ुफ़रानमॉब में वक़्फ़ की ज़मीनों पर नाजाएज़ क़ब्ज़ों के पेशे नज़र बाद नमाज़े जुमा एक मीटिंग मुनअक़्क़िद हुई। मजलिसे उलमा-ए-हिन्द के जनरल सिक्रेटरी क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद नक़वी ने मीटिंग को ख़िताब करते हुए कहा कि "अगर इस वक़्त हम अपने बाक़ी मान्दा औक़ाफ़ की हिफ़ाज़त न कर सके और अपने हुक़ूक़ की बाज़याबी की जिद्दो जोहद करने में नाकामियाब रहे तो फिर शायद हम कभी कामियाब न हो सकें। उन्होंने कहा कि शर्म की बात है कि हमारे औक़ाफ़ का नाजाएज़ तरीक़े से इस्तेमाल किया जा रहा है और वक़्फ़ की ज़मीनों पर शराब की दुकानें तक खुली हुई हैं। सिब्तैनाबाद, नरही, हुसैनाबाद ट्रस्ट और ना जाने कितने औक़ाफ़ पर हुकूमत या हुकूमती अफ़सरों की साज़ बाज़ से नाजाएज़ बिल्डिंग और अपार्टमेन्ट खड़े कर दिये गये हैं हमारे बुज़ुर्ग औक़ाफ़ की सूरत में हमारे लिए इतना सरमाया छोड़ गये थे कि हमें किसी की नौकरी या किसी के सामने दस्ते सवाल फैलाने की ज़रूरत ही न पड़ती लेकिन हमने खुद अपनी बर्बादी और गुर्बत के अस्बाब पैदा किये और आज हमारी इक़्तेसादी हालत पस्ती का शिकार है। नौजवान बे रोज़गार हैं और वो जवान जिनके पास अच्छी तालीम है उनके पास तरक़्क़ी के ज़ीने तै करने के लिए वो अस्बाब मुहय्या नहीं हैं जिनकी उन्हें ज़्यादा ज़रूरत होती है। हम अगर अपने औक़ाफ़ की ज़मीनें जिद्दो जोहद करके वापस लेने में कामियाब हो जाते हैं तो ये सारी मुश्किलात आसानी से हल हो सकती हैं।" मौलाना ने अपने ख़िताब में मज़ीद कहा कि "अगर औक़ाफ़ की बाज़याबी की कोशिशों में क़ौम हमारा हर पैमाने पर साथ देने के लिए तैयार है तो हम इन्शाअल्लाह जल्द ही अपने हुक़ूक़ को हासिल करने की मन्सूबा बन्दी करेंगे ताकि हमारे नौजवानों के मसाएल हल हो सकें। इस सिलसिले में हम कई बार वक़्फ़ अफ़सरान को इन्तेबाह दे चुके हैं कि वो जल्द अज़ जल्द कोई ऐसी तदबीर करें कि औक़ाफ़ की ज़मीनों से नाजाएज़ क़ब्ज़ों को हटवाया जा सके जिनमें खुसूसियत के साथ सिब्तैनाबाद, नरही, हुसैनाबाद ट्रस्ट की इम्लाक शामिल हैं।"

**(पेज नं० 14 का बाक़ी...............)**

(74) हराम तथा अपवित्र पदार्थों का खाना। (75) रमज़ान का रोज़ा (व्रत) बिना कारण न रखना। (76) मुसलमानों को धोखा देना। (77) अपने नगर तथा कुटुम्ब के बुरे लोगों को अन्य नगर तथा कुटुम्ब के भले लोगों से भला समझना। (78) बुराई सुनना। (79) नमाज़ रोज़ा दिखाने तथा सुनाने के लिए करना।

**तौबा (क्षमा याचना)**

अपने किये पापों की तुरन्त क्षमा मांगना तथा भविष्य में पाप न करने की प्रतिज्ञा करना अनिवार्य है। विलम्ब करने से मनुष्य दोषी होता है। क्योंकि पाप विष के समान है जिस प्रकार विष खा लेने वाले की चिकित्सा तुरन्त करना अनिवार्य है कि मृत्यु न हो जाए। उसी प्रकार पाप करने वाले को तत्काल तौबा करना भी अनिवार्य है कि पाप उसे नष्ट न कर दे। तौबा करने में विलम्ब करना दूसरा पाप है।

**कलमा**

"ला इला-ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलिल्लाहि अलीयुव वलीउल्लाहि व वसीयु रसूलिल्लाहि व ख़लीफ़तुहु बिला फ़स्ल।"

**अनुवादः**-अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य खुदा नहीं, मुहम्मद अल्लाह के पैग़म्बर (भेजे हुए) हैं। अली अल्लाह के वली (दोस्त) हैं और रसूल खुदा के वसी (पदाधिकारी) हैं और बिला फ़स्ल (निस्सन्देह) रसूल के ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) हैं।

**दुरूद**

अल्लाहुम्-म स्वल्लि अला मुहम्मदि-व व आलि मुहम्मद।

**अनुवादः**- ए अल्लाह अपने रसूल तथा उनके पवित्र सन्तानों पर दरूद (रहमत-कृपा दृष्टि भेज/वरदान दें)

**मुस्लिम**

अर्थात् मुसलमान जिसने 'अल्लाह' के धर्म (इस्लाम) को मुख से स्वीकार किया। उसूले दीन पर विश्वास करके उसे स्वीकार किया।

**मोमिन**

अर्थात् वह जिसने अल्लाह के आदेशों का भलीभांति पालन भी किया और मुख से इस्लाम धर्म स्वीकार करके उसूल-ए-दीन तथा फ़ुरूए दीन पर सहृदय विश्वास करके उसका पालन किया।

**मुसलमान की परिभाषा**

"अल-मुस्लिम सलमन्नास मिन यदही व लिसानिही।" (पुस्तकः 'जवाहिर-उल-बयान', पृष्ठ 214, मुद्रित निज़ामी प्रेस, लखनऊ (भारत)।

**अनुवादः**-मुसलमान वह है जिसकी जिहवा तथा हाथ से लोग सुरक्षित रहें। **(जारी..............)**